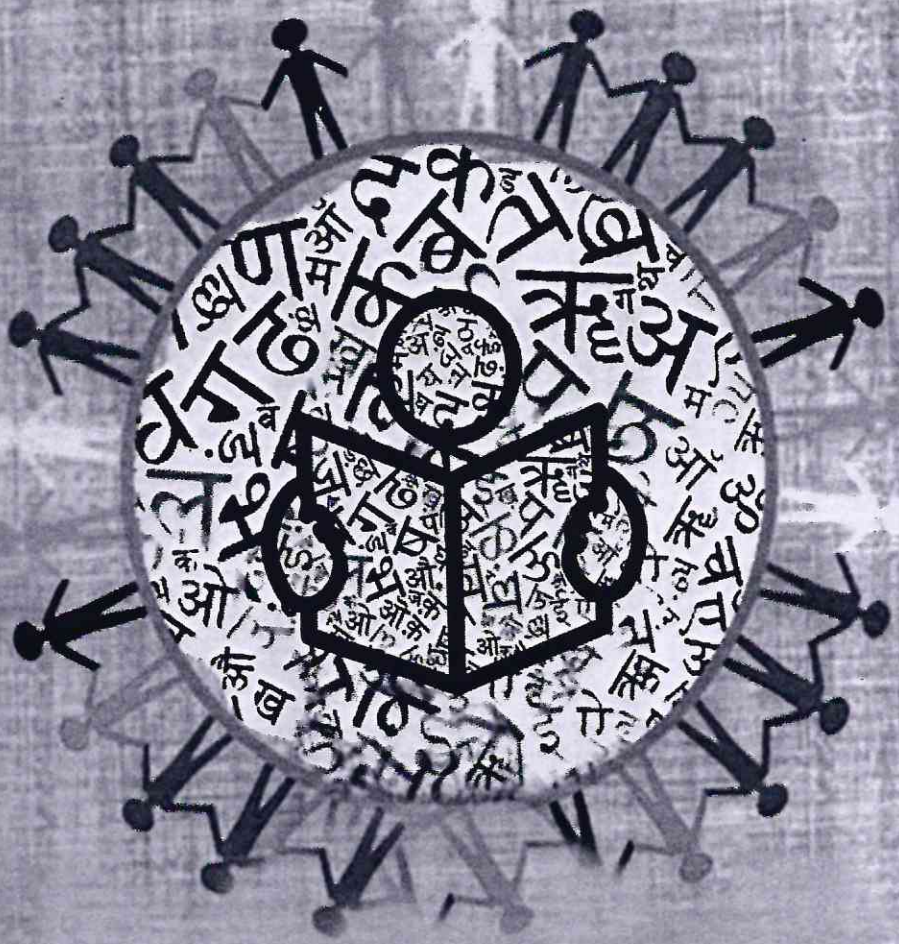

हिंदी साहित्य और भाषा
एक विवेचन

सम्पादक
डॉ. मनोहर जमदाडे, डॉ. नानासाहेब जावळे

12.	समोच्चरित भिन्न अर्थ वाले शब्द (शब्द-युग्म) **- डॉ. मनोहर जमदाडे**	**62**
13.	संक्षेपण लेखन कौशल **- डॉ. अनंत केदारे**	**69**
14.	वर्तमान राजनीति पर व्यंग्य करती कविता 'तीनों बंदर बापू के' **– डॉ. भरत शेणकर**	**77**
15.	'बात-बतंगड़' कविता में व्यंग्य विधान **– सहा. प्रा. रवींद्र ठाकरे**	**81**
16.	विद्वानों पर करारा व्यंग्य 'विद्वान लोग' **- सह. प्रा. भारत चव्हाण**	**86**
17.	अकाल में उभरी आम आदमी की पीड़ा 'कितनी रोटी' **- डॉ. मनोहर जमदाडे**	**89**
18.	भारतीय राजनीति की पोलखोल 'देश के लिए नेता' **- सह. प्रा. अच्युत शिंदे**	**92**
19.	खोखली जातिप्रथा पर प्रहार 'प्रेम की बिरादरी' **- डॉ. प्रदीप सरवदे**	**95**
20.	अफसरी मनोवृत्ति पर करारी चोट 'अफसर' **- डॉ. दीपा कुचेकर**	**100**
21.	भ्रष्ट व्यवस्था पर करारा व्यंग्य 'सावधान, हम ईमानदार हैं' **- डॉ. जिभाऊ मोरे**	**104**
22.	सत्ता के दुरुपयोग पर प्रकाश डालती कहानी 'मुख्यमंत्री का डंडा' **– डॉ. एकनाथ जाधव**	**107**
23.	बुढापे के दयनीय जीवन पर प्रकाश 'झोले' **– सहा. प्रा. अनिल झोळ**	**111**
24.	साक्षात्कार लेखन **– सहा. प्रा. नानासाहेब गोफणे**	**115**
25.	हिंदी भाषा से संबंधित प्रमुख एप्स **– डॉ. जयराम गाडेकर**	**124**
26.	पल्लवन लेखन एक कला अविष्कार **- डॉ. सारिका भगत**	**132**

26.

पल्लवन लेखन एक कला अविष्कार

पल्लवन शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के Expansion शब्द के हिंदी पर्याय के रूप में किया जाता है। पल्लवन को भाव विस्तार भी कहते हैं। 'पल्लवन' शब्द 'पल्लव' से बना है। 'पल्लव' का अर्थ है 'पत्ता'। जिस प्रकार खेती अथवा बागवानी के समय पहले बीज बोते हैं और फिर वह अंकुरित एवं पल्लवित होता है, उसी प्रकार जब हम किसी विषय रूपी बीज को विस्तार देना शुरू कर देते हैं, तब उसे पल्लवित करना कहते हैं। पल्लवन को कल्पना विस्तार भी कहते हैं।

पल्लवन में किसी संक्षिप्त गूढ़ गम्भीर विचार, भाव, सूक्ति को विस्तार से स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है। कवियों, लेखकों, विचारकों आदि द्वारा रची गयी या समाज में परम्परा से चली आ रही अनेक सूक्तियाँ होती हैं। आम व्यक्ति उनके मूल भाव अथवा अर्थ को ठीक तरह से समझ नहीं पाता। हमें ऐसी स्थिति में उस उक्ति को खोलकर उदाहरण देते हुए इस तरह से स्पष्ट करना चाहिए कि वह गूढ़ गम्भीर बात को सरलता से समझ जाये।

पल्लवन और निबंध को प्रायः एक जैसी रचना माना जाता है। जिसमें किसी निर्धारित विषय का विस्तृत विवेचन मिलता है। वास्तविकता यह है कि दोनों में काफी अंतर दिखाई देता है। निबंध में किसी विचार बिंदु का विस्तार कल्पना, प्रतिभा तथा मौलिकता के आधार पर किया जाता है जब कि पल्लवन में विषय का विस्तार एक निश्चित सीमा के अंतर्गत किया जाता है। इस प्रकार कलेवर की दृष्टि से निबंध तथा पल्लवन भिन्न-भिन्न है। पल्लवन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक हैं।

पल्लवन के नियम

१. पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति कहावत को मूल विचार भाव को ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि भाव, अर्थ अच्छी तरह से समझ में आ सके।

२. पल्लवन के मूल विचार के साथ सहायक विचारों को क्रमबद्ध रूप से समझने का प्रयास करना।

३. विचारों को समझने के पश्चात एक-एक कर सभी विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिखना।

४. पल्लवन की भाषा भावों की अभिव्यक्ति में सरल एवं सुबोध हो। पल्ल्वन में अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग न आये।

५. पल्लवन के लेखन में अप्रासंगिक बातों का अनावश्यक विस्तार या उल्लेख बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

पल्लवन के उदाहरण –

मेल से बल है

बचपन में हमने एक कहानी सुनी थी। एक घर में चार भाई थे और हमेशा आपस में झगड़ते रहते थे। एक दिन पिता ने चारों को एक-एक लाठी दी और कहा इसे तोड़ दो। सभी ने अपनी-अपनी लाठी तोड़ डाली। फिर पिता ने वैसे ही दूसरी चार लाठियाँ ली, उन्हें एक साथ बांधा और कहा अब इसे तोड़ो। चारों भाईयों ने उन लाठियों को तोड़ने की पूरी कोशिश की, परन्तु सफल नहीं हुए। तब पिता ने उन्हें समझाते हुए कहा, जिस तरह से तुमने अपनी एक-एक लाठी तोड़ डाली परन्तु एक साथ बंधी हुई लाठियाँ तुम नहीं तोड़ पाए, उसी प्रकार यदि तुम आपस में झगड़ते रहोगे तो कोई भी बाहर का आदमी तुममें फूट डालकर तुम्हे तोड़ सकता हैं। परन्तु यदि मिल जुलकर रहोगे तो कोई भी तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। पिता की बात सुनकर एकता की शक्ति चारों भाइयों के समझ में आ गई और उन्होंने आपस में झगड़ना छोड़कर मिल जुलकर रहना शुरू किया।

यह छोटीसी कहानी हमारी जिंदगी में बहुत मायने रखती हैं। अपना परिवार, समाज, देश हर एक इकाई पर यह बात लागू होती है। जब तक हम अलग-अलग रहेंगे, तब तक लोग हममें फूट डालकर हमें लुटते रहेंगे। अंग्रेजो ने तीन-सौ साल तक यही किया और हमारा शोषण किया। अभी भी हमारा देश अनेक विषमपरिस्थितियों से गुजर रहा है, परिणामत: जगह-जगह पर यही हो रहा हैं। पाखंडियों द्वारा जगह-जगह पर फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई जा रही है। कभी धर्म के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर तो कभी प्रदेश के नाम पर हममें फूट डालने का प्रयास जारी है। ऐसे समय में यदि हम एकता का प्रदर्शन न करें तो वह समय दूर नहीं जब हम पुनः गुलाम बन जाएँगे। कोई भी संकट हो उसका एक साथ मिलकर मुकाबला किया जाये तो वह संकट तीनके-सा बिखर सकता है। इसीलिए हम सभी को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए की मेल से बल है।

इलाज से बचाव अच्छा

आज कल अनेक भयंकर बीमारियाँ फ़ैल गयी है। आदमी रोगग्रस्त होने पर इलाज करता रहता है, और पानी की तरह पैसा बहाता रहता है। लेकिन कुछ ऐसी बीमारियाँ भी है कि उनपर अभी भी स्थायी रूप से इलाज नहीं हो सकता। जैसे की एड्स इस रोग पर अभी तक स्थायी रूप से इलाज नहीं हो सकता। इसलिए बाद में पछताने से पहले अगर खुद को बचाएँ रखा तो अच्छा होगा। रोगग्रस्त होने से लोगों की हमारी ओर देखने की दृष्टि बदलती है। सभी लोग घृणा तथा तिरस्कृत दृष्टी से देखते हैं। कुछ लोगों ने तो रोगग्रस्त होने पर लज्जा से आत्महत्या भी की है। रोगग्रस्त लोगों को हीन से हीन जीना जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है। समाज से भी उनको बहिष्कृत किया जाता है। इसलिए सभी बीमारियों से खुद को बचाये रखना ही लाभदायक होगा। बात केवल एड्स

की ही नहीं है, बल्कि हर बीमारी के बारे में कही जा सक
इलाज करने की अपेक्षा बीमारी ही न हो इसकी सावधानी
सड़क पर वाहन चलाते समय भी हमें इसका ध्यान रखन
होकर अस्पताल में इलाज करने की अपेक्षा दुर्घटना ही न
चाहिए। सभी रोगों से बचने का एक ही रास्ता है, नियमों क
है कि 'इलाज से बचाव अच्छा' है।

सन्दर्भ ग्रंथ -

१. प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम - डॉ. अंबादास देशमु
२. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. गोरक्ष थोरात
३. हिंदी साहित्य और भाषा – संपा. प्रो. डॉ. सदानंद भोसले

श्री पद्ममणि जैन
पाबळ, तह

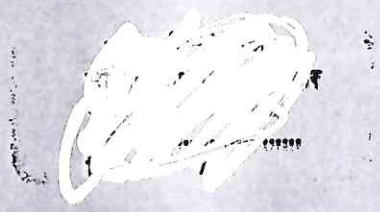

की ही नहीं है, बल्कि हर बीमारी के बारे में कही जा स
इलाज करने की अपेक्षा बीमारी ही न हो इसकी सावधा
सड़क पर वाहन चलाते समय भी हमें इसका ध्यान रख
होकर अस्पताल में इलाज करने की अपेक्षा दुर्घटना ही न
चाहिए। सभी रोगों से बचने का एक ही रास्ता है, नियमों
है कि 'इलाज से बचाव अच्छा' है।

सन्दर्भ ग्रंथ -

१. प्रयोजनमूलक हिंदी : अधुनातन आयाम - डॉ. अंबादास देशमु
२. प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. गोरक्ष थोरात
३. हिंदी साहित्य और भाषा – संपा. प्रो. डॉ. सदानंद भोसले

श्री पद्ममणि जै
पाबळ, तह